



बढ़ते कदम

वर्ष-14
अंक-12
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

जो सबको हैं भाते
पुष्प वही कहलाते

भारत के संविधान में राजभाषा

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है {संविधान का अनुच्छेद 343 (1)}। परन्तु हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है।

संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं।

किन् प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन् के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन् कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निर्देशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

अध्याय - 1

संघ की भाषा

अनुच्छेद 120. संसद् में प्रयोग की जाने वाली भाषा - (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद् में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

(2) जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो “या अंग्रेजी में” शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

अनुच्छेद 210: विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा - (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद् का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

(2) जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो “या अंग्रेजी में” शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो :

परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले “पंद्रह वर्ष” शब्दों के स्थान पर “पच्चीस वर्ष” शब्द रख दिए गए हों :

परंतु यह और कि अरुणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले “पंद्रह वर्ष” शब्दों के स्थान पर “चालीस वर्ष” शब्द रख दिए गए हों।

अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा--

(1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप होगा।

(2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद् उक्त पंद्रह वर्ष की अवधि के पश्चात्, विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—रामाशीष सिंह—	3
जीव का बंधन—	
—आर के सिंह	4
ज्योतिषशास्त्र का आविर्भाव	
—अरुण कुमार झा	5
हिन्दी से डर कैसा—	
—सुभाष कुमार पाठक	6
रेल समाचार—	
—निलेश कुमार	7
कोकिल कंठ की मल्लिका	
—सच्चिदानंद जिज्ञासु	9
एटीएम...	
—विकास कुमार	11
आदिवासियों का अर्द्धकुंभ	
—सुप्रिया राय	14
क्षमता एवं उसका व्यय	
—भारत भूषण पाण्डेय—	15
कल एवं आज	
—विजय कुमार	17
शब्द जोड़ में—	
—सच्चिदानंद साह	18
सोचती हूँ—	
—प्रिया प्रसाद	18

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.er.indianrailway.gov.in

सुमित्रानंदन पंत



सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 को अल्मोड़ा ज़िले के कौसानी नामक ग्राम में हुआ। जन्म के छह घंटे बाद ही उनकी माँ का निधन हो गया। उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। उनका प्रारंभिक नाम गुसाई दत्त रखा गया। वे सात भाई बहनों में सबसे छोटे थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई। अपने मँझले भाई के साथ काशी आ गए और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण कर वे इलाहाबाद चले गए। उन्हें अपना नाम पसंद नहीं था, इसलिए उन्होंने अपना नया नाम सुमित्रानंदन पंत रख लिया। असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बँगला और अंग्रेजी भाषा-साहित्य का अध्ययन करने लगे। उन्होंने इलाहाबाद आकाशवाणी के शुरुआती दिनों में सलाहकार के रूप में भी कार्य किया। उन्हें मधुमेह हो गया था। उनकी मृत्यु दिसम्बर 1977 को हो गई।

उनका व्यक्तित्व आकर्षण का केंद्र बिंदु था, मोहक देहयष्टि, गौर वर्ण, सुंदर एवं सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल उन्हें सभी से अलग मुखरित करता था। बीसवीं सदी का पूर्वाद्ध छायावादी कवियों का उत्थान काल था। सुमित्रानंदन पंत उस नये युग के प्रवर्तक के रूप में हिन्दी साहित्य में उदित हुए। हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में पंतजी एक स्थाई स्तंभ हैं। सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति चित्रण सबमें श्रेष्ठ था। प्रकृति के उपादानों का प्रतीक व बिम्ब के रूप में प्रयोग उनके काव्य की विशेषता रही है।

सात वर्ष की उम्र में उन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया था। कुछ ही दिनों में वे हिंदी के नवीन धारा के प्रवर्तक कवि के रूप में पहचाने जाने लगे थे। कुछ समय पश्चात वे अपने भाई देवीदत्त के साथ अल्मोड़ा आ गये। उन्होंने 'रूपाभ' नामक प्रगतिशील मासिक पत्र निकाला। काफी दिनों तक आकाशवाणी से जुड़े रहे और मुख्य-निर्माता के पद पर कार्य किया। उनके कवि-जीवन के प्रथम चरण की कविताएँ वीणा में संकलित हैं।

उसके बाद उच्छवास और पल्लव का प्रकाशन हुआ। सुमित्रानंदन पंत की कुछ काव्य कृतियाँ हैं ग्रन्थि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा, सत्यकाम आदि। उनके जीवनकाल में उनकी 28 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें कविताएं, पद्य-नाटक और निबंध शामिल हैं। हिंदी साहित्य की इस अनवरत सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण, ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से अलंकृत किया गया। सुमित्रानंदन पंत के नाम पर कौशानी में उनके पुराने घर को जिसमें वे बचपन में रहा करते थे, सुमित्रानंदन पंत वीथिका के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। आज के दौर में उनका घर हिन्दी साहित्य प्रेमियों के दर्शनार्थ एक आकर्षक केन्द्र बिन्दु है।

- रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	सुब्रतो सरकार अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी (प्र.)	सच्चिदानंद क. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर निलेश कुमार, ए.एल.पी

जीव का बंधन— इच्छाएं

मनुष्य संसार का सबसे अप्रतिम जीव है। इसके पास मन और बुद्धि दो ऐसे गुण हैं जिसकी सहायता से वह संसार के अन्य प्राणियों से सर्वथा अलग हो जाता है। लेकिन इन्हीं दो गुणों के कारण उसके पास अन्य जीवों की तुलना में कठिनाई भी बहुत है। इन सब का कारण सिर्फ इतना है कि वह अपने स्वरूप को भुला चुका है। उसे इस बात का ज्ञान ही नहीं है कि वह स्वयं वही है जो आनंद स्वरूप ईश्वर है। सिर्फ इसी भ्रांति की वजह से मनुष्य श्रेष्ठतम प्राणी होते हुए भी दुनिया के तमाम दुखों को भोगने के लिए बाध्य है।

हमारे उपनिषदों में लिखा है यदि मनुष्य के मन में इच्छाओं का जन्म न हो तो वह संसार का सबसे सुखी प्राणी हो सकता है। लेकिन इच्छाओं का जन्म क्यों नहीं होगा इसका ज्ञान हमें नहीं है। हम उन इच्छाओं पर अपना नियंत्रण कैसे पाएंगे, हमें ऐसा क्या करना चाहिए जिससे हम अपनी इच्छाओं को अपने हिसाब से नियंत्रित कर सकें या किसी सार्थक दिशा में परिवर्तित कर सकें, हमें इसका पता ही नहीं लगता।

इच्छाएं ही दुखों का कारण हैं और जबतक इच्छाएं रहेंगी तबतक दुःख से मुक्ति नहीं पाई जा सकती है। बौद्ध दर्शन में इच्छाओं को ही दुखों का कारण कहा गया है। इच्छाएं अज्ञानता के कारण उत्पन्न होती हैं और अज्ञान को ज्ञान के बिना पराजित नहीं किया जा सकता। बुद्ध ने अज्ञानता को अविद्या कहा है यह अविद्या जीव के जन्म लेते ही उस पर हावी हो जाती है और वह तब तक रहती है जब तक उसे ज्ञान की कटार से काट न दिया जाए। विज्ञान चाहे जितनी भी उन्नति कर ले परंतु इच्छाएं क्यों उत्पन्न होती हैं इसका कारण वह अभी तक नहीं खोज पाया है। पर आध्यात्म में इस बात का उल्लेख है कि इच्छाएं अविद्या के कारण पैदा होती हैं और अविद्या तीन कारणों से उत्पन्न होती है पहला कारण मायिक है, दूसरा कारण कार्मिक है और तीसरा कारण आणविक है।

इन कारणों को मल या आत्मा का आवरण भी कहते हैं। ये आवरण आत्मा के भीतर उत्पन्न अज्ञान के कारण होता है। मायिक मल वह मल है जिसकी वजह से जीव को जो है वह नहीं दिखता और जो नहीं है वही दिखता है। उदाहरण के लिए ईश्वर है पर मन मानता नहीं, अगर मानता भी है तो जानता नहीं। माया का अर्थ ही है जो है उसका नहीं दिखना और जो नहीं है उसका दिखना। यह संसार असत्य है प्रतिपल परिवर्तनशील है क्षणभंगुर है फिर भी माया की वजह से हम इसे सतत मान लेते हैं और उसके अनुरूप ही कार्य करते हैं। अगर हमें यह बोध हो जाए कि यह परिवर्तनशील है तो हम मायिक मल से बच सकते हैं।

दूसरा आवरण कार्मिक मल है। इस संसार में जन्म लेने का एक विशेष उद्देश्य है वह उद्देश्य विभिन्न प्राणियों से बनाए गए संबंध हैं लिए गए निर्णय हैं और किए गए संकल्प हैं। उन सभी को कार्मिक मल के अंतर्गत रखा जाता है। कहने का अर्थ है कि हमें उन संबंधों को, उन निर्णय को और उन संकल्पों को पूरा करने के लिए इच्छाओं के जाल में घूमना होगा। अर्थात् जबतक यह मल रहेगा तबतक हमारे भीतर इच्छाएं जन्म लेती रहेगी। यह कार्मिक मल हमारे भीतर इच्छाएं उत्पन्न करने के लिए अधिकांश मात्रा में जिम्मेवार है।

तीसरा कारण -- इसे आणविक मल कहते हैं और वह है अपने को अणु मान लेना। कहने का अर्थ है हम भी शिव ही हैं, हम भी ईश्वर ही हैं लेकिन हमने अपने को इतना छोटा जैसे अणु हो के समान मान लिया है सूक्ष्म मान लिया है कि हमें उस ईश्वरत्व का शिवत्व का बोध ही नहीं होता। यही कारण है जिसकी वजह से इच्छाएं उत्पन्न होती हैं और वह इच्छाएं सिर्फ इसलिए होती हैं कि हमें और उसे बड़ा होना है अर्थात् शिवत्व को प्राप्त करना है।

यदि तीनों मलों को दूर कर दिया जाये तो निश्चित रूप से अविद्या का नाश हो जाएगा और हम अपनी इच्छाओं के जाल से मुक्त हो सकेंगे।

— आर के सिंह

ज्योतिषशास्त्र का आविर्भाव

गतांक से आगे

326 ईस्वी पूर्व में महान सिकंदर भले ही भारत के पश्चिमी दरवाजे को दस्तक देकर ही लौट गया हो परंतु इस आक्रमण से भारतीय एवं पश्चिमी सभ्यताओं के मिलन का द्वार खुल गया। सिकंदर के बाद अनेक यूनानी व्यापारी, विद्वान, ज्योतिष, कलाकार, सैनिक यहां तक की साधारण जनता भी समुद्र में छोटी-छोटी नदियों की भांति समाहित होने लगे। वह अपने साथ वहां की जीवन शैली, भाषा, विज्ञान, संस्कृति, कला, युद्ध-शैली, वेशभूषा, स्थापत्य और न जाने कितने संपदाय भारत लेकर आए जिससे भारत में भी हर देश की तरह क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। ऐसा लगता है कि यूनानी आक्रमण अपने साथ एक प्रकाशपुंज लेकर आया जिसके आलोक में भारत का प्राचीन इतिहास एकाएक अंधेरे से प्रकाशमान हो उठा क्योंकि भारत में इतिहास लेखन की परंपरा नहीं थी जिससे सिकंदर से पूर्व भारतीय इतिहास लगभग अंधेरे में है। परंतु यूनानी साहित्यकार मेगास्थनीज द्वारा रचित प्रथम भारतीय इतिहास *इंडिका* तथा कालांतर में विदेशी बौद्ध भिक्षुओं (श्रीलंका, चीन, कंबोडिया) की रचनाओं में तत्कालीन भारत के महान इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

इन विभिन्न पुस्तकों में भारतीय ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान के बारे में भारतीय विद्वानों की पहुंच का वर्णन प्राप्त होता है। यूनानी विद्वानों ने जहां भारतीय ज्योतिष ज्ञान को *सूर्य सिद्धांत* नामक पुस्तक के रूप में अपनी भाषा में अनुवाद किया है वहीं भारतीय विद्वानों ने भी यवनों के गणितीय एवं खगोलीय कौशल को *यवनजातक* एवं *रोमाका सिद्धांत* नामक पुस्तकों में संस्कृत में अनुवाद किया है। उस काल में प्रसिद्ध तक्षशिला विश्वविद्यालय जो अब पाकिस्तान में है में अन्य शास्त्रों की तरह ज्योतिषशास्त्र भी पाठ्यक्रम का अंग था। प्राचीन भारतीय ज्योतिष आगस्त की तरह इस काल में भी ऋषि परासर की *पराशर ज्योतिष एवम् भृगु* की महान पुस्तक भृगु संहिता अनमोल रचना है। बनारस के स्कूलों में नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय में भी ज्योतिष शास्त्र की पढ़ाई होती थी।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सूर्य वास्तव में पांचवी सदी के गुप्त काल में एकाएक देदीप्यमान होता है। अर्थ, धर्म, साहित्य, कला, संस्कृति आदि हर क्षेत्र की तरह ज्योतिषशास्त्र के लिए भारत का स्वर्णिम काल था। इस काल में जहां साहित्य में कालिदास, भवभूति, पाणिनी और चिकित्सा के क्षेत्र में चरक, सुश्रुत आदि की तरह ज्योतिष के क्षेत्र में भी आर्यभट्ट ब्रह्मगुप्त वाराहमीहिर, लल्ला, भास्कर प्रथम, भास्कर द्वितीय आदि वैज्ञानिक एवं खगोल शास्त्री हुए। इनके विभिन्न आविष्कार एवं लिखी गई रचनाएं पूरे विश्व की अनमोल धरोहर हैं। आज उस काल की प्रमुख रचनाओं में आर्यभट्ट की *आर्यभटीया* ब्रह्मगुप्त की *ब्रह्मसphuत सिद्धांत* वराह मिहिर *पनका सिद्धांत* लल्ला *शिष्यावरधौट*, *ग्रह अध्याय*, *गोल अध्याय*, भास्कर *महत् भास्कर* एवं *लघु भास्कर*

दक्षिण भारत में भी 1520 बीसी में केरल में ज्योतिष केंद्र की स्थापना हो गई थी। दक्षिण के ज्योतिषियों ने भी अनेक महान रचनाएं की हैं नीलकंठन संभाजी - *ज्योतिर मीमांसा* और अच्युतशास्त्री *उपरागत्रिया* महान गणितज्ञ एवं खगोल शास्त्री रामानुज के योगदान को कौन भुला सकता है। मध्यकालीन भारत में भी तुगलक के दरबारी ज्योतिष श्रीपति की *सप्तक्रद्धि* एवं महेंद्र पुरी लिखित *यत्न राजाधिकार* तथा *यत्नकिर्णव* नामक रचना महत्वपूर्ण है। सवाई जयसिंह (1688 -1743 ई.) नामक राजपूत राजा विद्वान और महान ज्योतिषी थे। उन्होंने मथुरा, जयपुर, बनारस एवं उज्जैन में भी तारामंडल के स्थापना की। जय सिंह द्वितीय ने दिल्ली तथा अमेर में तारामंडल की स्थापना की।

12 वीं सदी में मोहम्मद अल हजारी नामक अरबी ज्योतिषी ने अनेक वर्षों तक भारत के ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन कर उनका अनुवाद अरबी भाषा में किया। अमेरिकी नाशा के प्रथम चंद्र अभियान में बिहार के महान गणितज्ञ श्री वशिष्ठ नारायण सिंह की गणितीय रचना का उपयोग किया गया था। पश्चिम में मेसोपोटामिया सभ्यता में ज्योतिषी अन्वेषण के प्रमाण मिलते हैं। ग्रीस के महान ज्योतिष सुकरात, प्लेटो सिकंदर के गुरु अरस्तु ज्योतिष के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। आधुनिक युग में ब्रिटिश ज्योतिष शेफारिपल (1864 -1929) एवं एलानलियो (1807 -1971) ने नए अंदाज में ज्योतिष को लोकप्रिय किया। अमेरिका में मार्शिया मूर एवं मार्क डगलस ने आधुनिक कुंडली की शुरूआत कर लोकप्रिय बनाया।

हिंदी से डर कैसा

राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का नाम आते ही या इसकी चर्चा होते ही हिंदी की भयावहता, हिंदी का साम्राज्यवाद या हिंदी वर्चस्व का डर फैलने लगता है। क्योंकि कुछ एक दक्षिण भारतीय राज्य में हिंदी का भय और भ्रम परम मुखर होकर प्रकट होने लगते हैं। इसके केवल राजनीतिक कारण है, सामाजिक नहीं। पिछले वर्ष केंद्र सरकार के एक परिपत्र को लेकर जो बवाल मचा वह किसी से छिपा नहीं है। इसमें सोशल साइटों पर अंग्रेजी के साथ हिंदी के उपयोग की बात कही गई है। सच तो यह है कि सरकारी कामकाज में हिंदी को लागू करने का निर्देश भारत सरकार के मंत्रियों और अफसरों के लिए एक सरकारी कार्य और औपचारिकता भर है।

भाषा के प्रति लगाव या किसी वैज्ञानिक सोच का नतीजा नहीं। असली सवाल यह है कि एक छोटे से विभाग से चली तथाकथित चिट्ठी से या इसके माध्यम से दिखने वाली हिंदी की वकालत से अंग्रेजी या दूसरी भारतीय भाषाओं के राजनीतिक नेतृत्व के पांव क्यों कांपने लगे? तभी तो किसी को तमिल अस्मिता और किसी को उर्दू की इज्जत का ख्याल सताने लगा। क्या वाकई आज की तारीख में हिंदी ऐसी विशेषाधिकार संपन्ना भाषा है, जो बाकी भाषाओं के हित या उसका हिस्सा मार सके? उपयोग सवाल पर ठीक से विचार करें तो पाते हैं कि दरअसल भारतीय भाषा और हिंदी के बीच झगड़ा लगाने का काम अंग्रेजी कर रही है। जिस सर्कुलर को हिंदी के अखबार और टीवी चैनलों ने कुछ उपेक्षा के साथ देखा उसे अंग्रेजी अखबार और टीवी चैनलों ने भरपूर जगह दी। कुछ ने इसे इस तरह पेश किया जैसे हिंदी का इस्तेमाल करने वाले वर्तमान सरकार के मुखिया और उनके दूसरे हिंदीप्रेमी मंत्रियों ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए एजेंडा के तौर पर यह काम किया है। उन्होंने यह भी ठीक से नहीं बताया कि दरअसल केंद्र सरकार का सर्कुलर बस केंद्रीय विभागों, कार्यालयों और उन राज्यों तक सीमित है जहां हिंदी बोली जाती है। उनका बाकी राज्यों के कामकाज से लेना-देना नहीं है।

इसी का परिणाम था कि दक्षिण भारतीय राज्यों को अचानक हिंदी के वर्चस्व का डर सताने लगा और वह फिर अंग्रेजी की छतरी लेकर खड़े हो गए। पर प्रश्न यह है कि अंग्रेजी आखिर यह खेल क्यों करती है क्योंकि अंग्रेजी इस देश में शोषण और विशेषाधिकार की भाषा है। इस देश की 1% आबादी भी अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा या मुख्य भाषा नहीं मानती है, लेकिन देश के सारे साधनों संसाधनों पर जैसे अंग्रेजी का कब्जा है। अंग्रेजी की इस हैसियत के आगे हिंदी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाएं दायम दर्जे की साबित होती हैं। इस दृष्टि से देखें तो हिंदी नहीं अंग्रेजी भारतीय भाषाओं की दुश्मन है। रोटी और रोजगार के सारे अवसर अंग्रेजी को सुलभ हैं। सरकारी और आर्थिक तंत्र अंग्रेजी को सुलभ हैं। सरकारी और आर्थिक तंत्र अंग्रेजी के बलबूते चलते हैं। पढ़ाई लिखाई का माध्यम अंग्रेजी हुई जा रही है।

बहुत से हिंदी वालों को यह घमंड है कि हिंदी अभी इंटरनेट पर पसर रही है। कई देशों में पढ़ाई जाती है। टीवी चैनलों और अखबारों में नजर आती है और अब तो इसमें हॉलीवुड की बड़ी बड़ी फिल्में भी डब करके दिखाई जाती है। इससे यह लगता है कि हिंदी का संसार फैल रहा है। शायद दूसरी भाषाओं को भी यही लगता है लेकिन सच्चाई यही है हिंदी बस एक बोली की तरह बची हुई है जिसका बाजार में इस्तेमाल किया जाता है। ज्ञान विज्ञान की भाषा के तौर पर हिंदी लगातार कमजोर होती जा रही है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यही स्थिति उर्दू, तमिल या तेलगु की है। इन भाषाओं के लेखक पत्रकार या तो सरकारी अनुदान पर चलते हैं या अंग्रेजी संस्थानों द्वारा निकलने वाले भाषाई अखबारों या चैनलों में काम करते हैं।

रेल समाचार

टिकट कैंसिल अब 139 पर

ट्रेन में सफर करने वालों के लिए एक राहत भरी खबर है। अब आप फोन पर ही अपना कन्फर्म रिजर्वेशन टिकट कैंसिल करा सकते हैं। जी हां, रेल यात्री घर बैठे काउंटर से खरीदे गए रेल टिकट को 139 पर फोन कर कैंसिल करा सकेंगे। इसके अलावा यात्री 139 पर एसएमएस भेज कर आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर जाकर भी टिकट रद्द सकते हैं। केंद्रीय रेलमंत्री सुरेश प्रभु ने इस सर्विस की शुरुआत की। इस सुविधा के लिए जरूरी है कि पैसेंजर ने टिकट बुक कराते वक्त अपना मोबाइल नंबर दर्ज कराया हो।

यह सुविधा उन यात्रियों के लिए है, जो काउंटर से टिकट खरीदते हैं और किसी विशेष स्थिति में टिकट कैंसिल कराना चाहते हैं। इस सुविधा के तहत काउंटर से टिकट लेने वाला यात्री कन्फर्म टिकट रद्द कराने के लिए जब 139 पर फोन करेगा तो यात्रियों को आईवीआर के मेनू में से विकल्प 6 को चुनना होगा। इसके बाद पैसेंजर को वन टाइम पासवर्ड मिल जाएगा। इसके बाद तय अवधि के भीतर पैसेंजर को काउंटर पर अपना टिकट लेकर पहुंचना होगा और उस पासवर्ड के जरिए टिकट रद्द कराकर रिफंड लेना होगा।

अगर कोई पैसेंजर एसएमएस से टिकट रद्द कराना चाहता है तो पैसेंजर को कैंसिल शब्द लिखकर पीएनआर नंबर और फिर स्पेस देकर ट्रेन नंबर लिखकर उसे 139 पर एसएमएस करना होगा। उसके बाद पैसेंजर को मोबाइल पर ही ओटीपी मिल जाएगा। पैसेंजर को ट्रेन रवाना होने से कम से कम चार घंटे पहले टिकट कैंसिल करा सकते हैं। इसके अलावा ट्रेनों के वक्त को देखते हुए भी समय सीमा तय होगी। ट्रेन प्रस्थान होने के समय से चार घंटे पहले टिकट रद्द कराने पर यात्री को रिफंड मिलेगा। इसके बाद नहीं। शाम छह बजे से सुबह छह बजे के बीच ट्रेन होने पर अगले दिन सुबह काउंटर खुलने के दो घंटे पहले टिकट दिखाकर यात्री रिफंड पा सकेंगे। रिफंड के लिए उसी स्टेशन पर जाना होगा जहां से ट्रेन पकड़नी थी।

अब प्रश्न उठता है इस स्थिति का सामना कैसे किया जाए। यह एक लोकप्रिय तर्क है कि अंग्रेजी ही दुनिया से जोड़ रही है, बाजार से भी, प्रौद्योगिकी से भी और उच्च शिक्षा से भी। ऐसे में हिंदी या भारतीय भाषाओं की बात करना पिछड़ापन की बात करना है, बेईमानी है। आईआईएम और आईआईटी की चकाचौंध भरी दुनिया के मुकाबले किसी देहाती संसार की कल्पना करना है। मुश्किल यह है कि भाषा जैसे संवेदनशील मसले पर हमारी राजनीति की कोई दृष्टि ही नहीं है।

इस पर कभी राम मनोहर लोहिया ने भरपूर विचार किया था। उनका मानना था कि बातें सिर्फ हिंदी कि नहीं सभी भारतीय भाषाओं की होनी चाहिए और इनके बीच अंग्रेजी को एजेंट का काम छोड़ देना चाहिए। यही नहीं जब तक यह भाषाएं सरकारी कामकाज और रोजगार की भाषा ही नहीं बनाई जाती इनकी कोई पूछ नहीं रहेगी। लेकिन हमारा पूरा शासन प्रशासन तंत्र अंग्रेजी में चलता है और छोटे से समुदाय की हसरतों के हिसाब से चलता है। किसी समुदाय को हिंदी को खड़े होने में एक प्रतिक्रियावादी डर दिखाई देता है।

इसके साथ ही हिंदी है भारतीय भाषाओं में मौलिक शोध या लेखन के लिए राजकीय योजनाएं अलग से कोई प्रावधान नहीं करतीं। विज्ञान की तो बात ही छोड़ दें इतिहास या समाजशास्त्र में भी मौलिक शोध लेखन के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इतिहास परिषद और समाज विज्ञान शोध परिषद में किसी ने भी कभी इस विषय पर गंभीर चिंतन किया हो इसका प्रमाण नहीं है। हिन्दी को भले ही राजभाषा का दर्जा दे दिया गया हो पर वास्तव में राजभाषा के लिए जो कार्य किए जाने चाहिए वे नहीं हो पा रहे हैं। हिंदी में अनुशासन विशेष में संवाद के लिए आवश्यक उत्सुक समूह का होना भी जरूरी है। इन सबके बावजूद भी हमें आश्चस्त होना चाहिए कि हिंदी राष्ट्रवाद का वाहक है, विनाशक नहीं।

घर जैसे खाने का आनंद सफर में

भारतीय रेलवे के यात्रियों के लिए खुशखबरी ! अब ट्रेन में यात्रा करने वाले मुसाफिर स्व-सहायता समूहों द्वारा बनाए गए घर जैसे खाने का आनंद सफर में ले सकेंगे। रेलवे के मुताबिक, महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर इस परियोजना की शुरुआत हो चुकी है।

आईआरसीटीसी के एमडी के अनुसार किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए ट्रेन पैसेंजर्स को स्थानीय भोजन देने के लिए इस परियोजना को लेकर नाबार्ड के साथ साझेदारी हुई है। कोंकण क्षेत्र के दो स्टेशनों कुंडल और सावंतवाडी को पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर चुना गया है। आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर जाकर पैसेंजर अपनी यात्रा के



दौरान भोजन की बुकिंग करा सकेंगे। इसी तरह की पहल को केरल में भी शुरू किया गया है। यह पायलट प्रोजेक्ट 2016-17 रेल बजट में रेल मंत्री की घोषणा में भी शामिल था।

रेलवे ने यात्रियों को ई-कैटरिंग फैसिलिटी ऑफर करने के लिए यह सेवा लॉन्च की है जिससे वह फूड सप्लायर्स और पैट्री कार पर कम निर्भर रहें।

रेलवे में हाफ टिकट पर पूरी सीट नहीं

रेलवे ने हाफ टिकट का कॉन्सेप्ट बदल दिया है। अभी तक रेलवे में हाफ टिकट लेकर बच्चों के लिए पूरी सीट हासिल करने वाली प्रक्रिया अब समाप्त कर दी जाएगी। हाफ टिकट पर बच्चे अब माता-पिता या बड़ों की सीट को ही शेयर करेंगे।

भारतीय रेलवे के इस बड़े कदम से हर साल 2 करोड़ यात्रियों को कंफर्म सीट मिल पाएगी। रेलवे को इससे हर साल 525 करोड़ रुपए की कमाई भी होगी। रेलवे में अभी 5 से 12 साल के बच्चों का हाफ टिकट लगता है और उन्हें पूरी सीट मिलती है। इस योजना के अमल में आने के बाद इस उम्र के बच्चों के लिए अगर सीट मांगी जाएगी तो उनका किराया भी पूरा लगेगा। हाफ टिकट वाली अभी भी चलती रहेगी लेकिन इसमें पूरी एक सीट मिलने का प्रावधान खत्म हो जाएगा। ये नया नियम 22 अप्रैल से लागू होगा। 5 साल से कम उम्र के बच्चों को लेकर टिकट प्रक्रिया में किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया गया है। 5 से कम उम्र के बच्चे बिना सीट के ट्रेन में मुफ्त सफर करते रहेंगे।

ऐसी रिपोर्ट्स हैं कि साल 2014-15 में 5-12 साल के 2.11 करोड़ बच्चों ने आधा टिकट पर रेलवे में सफर किया है। रेलवे ने अनारक्षित टिकटों की श्रेणी में बच्चों के किराए में कोई बदलाव नहीं किया गया है। रेलवे अब रिजर्वेशन फॉर्म भी बदलेगा जिससे यात्री बच्चों के लिए फुल सीट के लिए अलग से अप्लाई कर सकें।

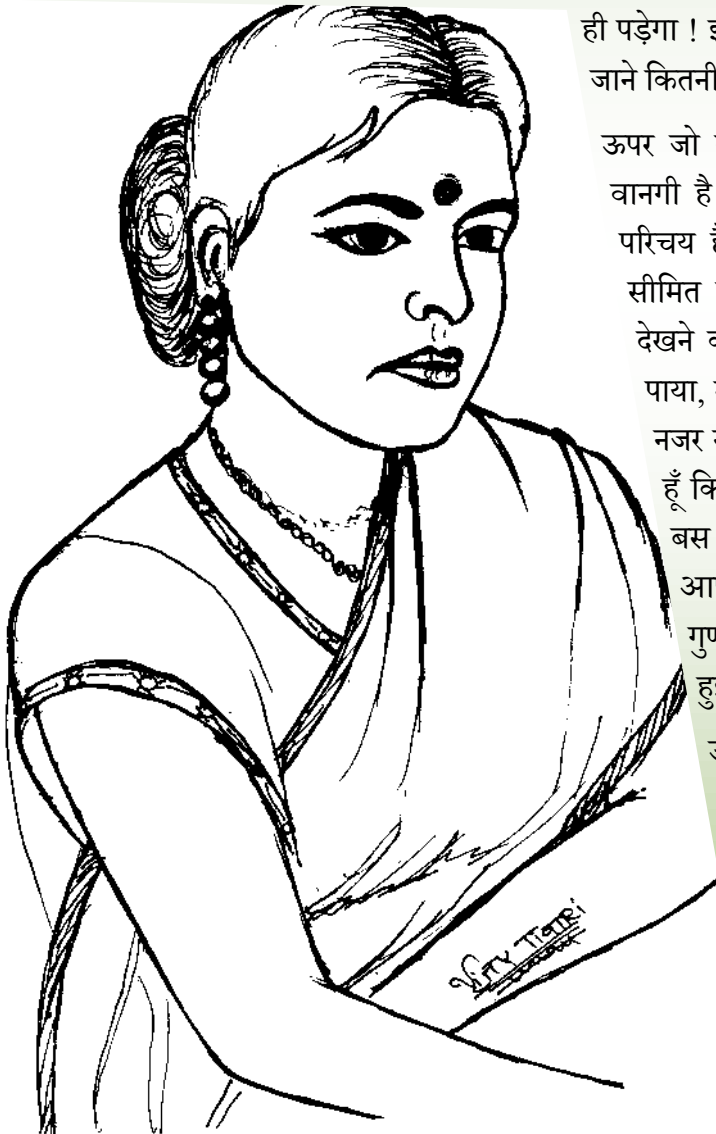
कोकिल कंठ की मल्लिका

गोल मटोल, आकर्षक चेहरा, संगीत और कला प्रेमी, कोकिल कंठ की मल्लिका, स्वच्छन्द हँसी, रोते को भी हँसा देनेवाली, कदकाठी लगभग 5.5 फीट, स्वस्थ, बुलंद चेहरा, साज श्रृंगार के नाम पर सिर्फ बोरोलीन, देखने में पक्का भारतीय नारी, बातचीत का लहजा खांटी हिन्दुस्तानी 150 से 200 रुपये की मामूली साड़ी, न पहनने का विशेष ढंग, मानों तन को किसी प्रकार ढक लिया हो, न मैचिंग ब्लाउज पहनने की चिन्ता, न ओठों पर लिपिस्टिक, न बालों में गजरा न आँखों में काजल, न गालों पर लालिमा, चुल भी कोई खास लम्बा नहीं, न सेंट की महक फिर भी चित्ताकर्षक चेहरा !

हंस दे तो रोते हुए को हंसा दे ! संगीत गुनगुना दें तो पथिक ठिठक जायें, कहानी शुरू कर दें तो फिर बिहार से बंगाल गाड़ी चली आए, परन्तु मुख बन्द नहीं, मानो पार्लियामेंट में या कोर्ट में कोई केस बहस कर रही हो। अधिकांश समय मनपसंद गाना सुनते रहना और अपने आप में मस्त रहना, समाज सेवा में सबसे आगे, इतने गुणों की खान कि इसके जोड़ की दूसरी मिसाल मिलना तो दूर पॉसंग के बराबर भी कोई टिक नहीं सकता। सबकी चहेती जो एकबार इससे मिल लें, दो

बातें कर लें, वो इसके प्रशंसक बने बिना नहीं रह पाए। इसकी प्रशंसा में पुल बँधना

ही पड़ेगा ! इतने गुण, कुशलता, क्षमा, त्याग-तपस्या और न जाने कितनी गुणों की खान है वह।



ऊपर जो कुछ मैंने वर्णन किया है वह तो उसकी मात्र वानगी है क्योंकि मेरी भी हालफिलहाल की ही उससे परिचय है। मेरा उसका परिचय भी आफिस तक ही सीमित है। उसकी भीतरी दुनिया में कभी झोंक कर देखने का मौका नहीं मिला, फिर भी जो कुछ समझ पाया, महसूस किया वह कोई परी, अप्सरा से मुझे कम नजर नहीं आई। अक्सर मैं उसके बारे में कहते रहता हूँ कि भगवान ने तुमको फुर्सत में बनाया होगा। वह बस मुस्करा देती है, उस मुस्कान को देखने पर आपको भी एहसास होगा कि सचमुच वह अनेक गुणों को अपनी साढ़े पांच फीट की काया में समेटे हुई है।

उसकी चालढाल बातचीत के लहजे को देखकर अजनबी व्यक्ति चाहे नर हो या नारी सोचने पर विवश हो जाते हैं कि यह बालिका बंगाली है कि बिहारी। कुछ महिलाएँ तो पूछ ही लेती हैं और बिना जाने निष्कर्ष निकाल लेती है कि कुछ तो मामला गड़बड़ है। निश्चित रूप से यह लड़की बिहारी है, पर प्रेम भालोवासा के चक्कर में पड़कर किसी बंगाली छोकरा

का हाथ थाम ली है खैर ! वह लड़का भी कम नसीब वाला नहीं होगा जिसका वह हाथ थामी होगी । जितनी मुँह उतनी बात !

हाँ तो मैं आपको उसका परिचय करा रहा था और कहाँ से कहाँ भावावेश में भटक सा गया, फिर आ रहा हूँ उसके पास । हाथ में बस लाल पोला, शंखा और दो चार मामूली काँच की चुड़ियाँ, चप्पल फुटपाथ पर बिकने वाली सौ ढेड़ सौ की मामूली चप्पल, बस पाँव में फिट हो जाए जिससे कि रास्ते में पाँव में कुछ गड़े नहीं । साड़ी, चप्पल की तो बात मैंने बतला दी क्योंकि मैं इसे बाहरी आँखों से नित रोज देखता हूँ । भीतर क्या कोई कीमती अंगवस्त्र पहनती होगी, सवाल ही नहीं उठता, न क्रीम का खर्च, न लिपिस्टीक, न कोई सेंट, इत्र, न आँखों में काजल, इसके वावजूद भी चाँद को लजा देने वाला मुखड़ा ।

दूसरों के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं क्योंकि अच्छा खासा तनखाह पाती है वह । फिर भी इतनी मामूली वेष में रहना क्या मूड की बात है । घरों की चारदिवारों में रहनेवाली औरतों को जाकर देखिए 400 से कम की साड़ी पहनने में अपने आपको अपमानित समझती है । क्या साज श्रृंगार पूछिए तो कहेगी हम नौकरी नहीं करती तो क्या मैं फटी साड़ी ही पहनूँ ? मुझे क्या दफ्तर में आराम से कुर्सी तोड़नी है ? मुझे कितना काम करना पड़ता है, कमर टूट जाती है, तो आखिर हमारा शौक मौज कब पूरा होगा । देखिए, इसबार फिर मैं भटक गया, बात उसकी हो रही थी तो फिर वापस उसके पास ही जाता हूँ, उसके संबंध में बस निम्न पंक्तियाँ कहना चाहूँगा ।

रुखा सूखा खाइके ठण्डा पानी पी
देखि पराई चूपड़ी मत ललचाओ जी
चेहरे को खिला रखिये लटकने न दीजिए
मनहुसियत को पास फटकने न दीजिए
हर फिक्र और गम को हंसी में उड़ाइए
जीने का मजा लीजिए, हँसिए-हँसाइये ।

कैसे हंसा जाए, मस्त रहा जाए, इस कला को जानने के लिए कोकिल कंठ की मलिका से हो सके तो एकबार मिल लीजिए या उपर्युक्त बातें जो उसके संबंध में कही गई हो उसका अनुसरण करें तो आपका जीवन बहुत हद तक सुधर जाएगा।

संतोष परम सुखम् इस सूत्र को जीवन में अपनाइये । पैसे के पीछे मत दौड़िये अन्यथा दौड़ते दौड़ते जिन्दगी कट जायेगी हाथ में कुछ नहीं आयेगा । फिर तो जीने का आखिर उद्देश्य क्या है? यह सब छूट जाएगा । इसीलिए कम खाइये गम खाइये की नीति जीवन में अपनाइये ।

निश्चित रूप से आप सुखी रहेंगे । कोकिल कंठ की मल्लिका बहुत सुरीला गाती है यूँ हर वक्त गुनगुनाती रहती है तथा सबको सहज ही अपना बना लेती है इसीलिए इसे सबलोग प्यार से मेरी सहेली कहते हैं । सबके सुख दुःख में उसके साथ नजर आती है । पर उसकी मुस्कुराहट मनचलों के दिल पर बिजली भी गिराती है । सचमुच में वह सबकी प्रिय सहेली ही हैं । इनसे हमलोगों को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, क्योंकि इसमें समाज सेवा का गुण कूट-कूट कर भरा है । लगता तो नहीं कि कहीं ऐसी भी नारी होती पर यह सच है वह भी हमारे आपके पास ही कहीं है । तभी तो मैंने इसे अपनी लेखनी में स्थान दिया है । कोकिल कंठ की मल्लिका को शत् - शत् धन्यवाद ।

—सच्चिदानन्द जिज्ञासु

एटीएम : आज की आवश्यकता

क्या है एटीएम ?

स्वचालित गणक मशीन (आटोमेटिड टैलर मशीन, अर्थात एटीएम) को आटोमेटिक बैंकिंग मशीन, कैश पाइंट, होल इन द वॉल, बैंकोमैट जैसे नामों से यूरोप, अमेरिका व रूस आदि में जाना जाता है। यह मशीन एक ऐसा दूरसंचार नियंत्रित व कंप्यूटरीकृत उपकरण है जो ग्राहकों को वित्तीय हस्तांतरण से जुड़ी सेवाएं उपलब्ध कराता है। इस हस्तांतरण प्रक्रिया में ग्राहक को कैशियर, क्लर्क या बैंक टेलर के मदद की आवश्यकता नहीं होती है।



खुदरा यानि रिटेल बैंकिंग के क्षेत्र में एटीएम बनाने का विचार समांनातर तौर पर जापान, स्वीडेन, अमेरिका और इंग्लैंड में जन्मा और विकसित हुआ।

मौटे मौर पर लंदन और न्यूयॉर्क में सबसे पहले इससे प्रयोग में लाए जाने के उल्लेख मिलते हैं। 1960 के दशक में इसे बैंकोग्राफ के नाम से जाना जाता था। कुछ दावों के अनुसार सबसे पहले प्रायोगिक तौर पर 1961 में सिटी बैंक ऑफ न्यूयॉर्क ने न्यूयॉर्क शहर में ग्राहकों की सेवा में चालू किया था। वैसे ग्राहकों ने तब इसे अस्वीकृत कर दिया था। इस कारण छह माह के बाद ही इससे हटा लिया गया था। इसके बाद टोक्यो, जापान में 1966 में इसका उपयोग हुआ था। आधुनिक एटीएम की सबसे पहली पीढ़ी का प्रयोग 27 जून, 1967 में लंदन के बार्केले बैंक ने किया था। उस समय तक कुछ ही ग्राहकों को इसकी सेवा का लाभ मिल पाया था। उस समय आज के एटीएम कार्ड के बजाए क्रेडिट कार्ड के जरिए इसकी सेवाओं का उपयोग किया जाता था। इंग्लैंड में प्रयोग में लाई गई मशीन के आविष्कार का श्रेय जॉन शेपर्ड को जाता है। इसके विकास में इंजीनियर डे ला रूई का भी महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान एटीएम मशीनें इंटरबैंक नेटवर्क से जुड़ी होती हैं। यह नेटवर्क पीयूएलएसइ, पीएलयूएस आदि नामों से जाने जाते हैं।

कैसे काम करता है एटीएम

एटीएम एक तरह का डाटा टर्मिनल होता है, जिसमें इनपुट और आउटपुट डिवाइस होते हैं। यह होस्ट प्रोसेसर से जुड़ा होता है, जो बैंक और एटीएम के बीच कड़ी का काम करते हैं। यह प्रणाली टेलीफोन नेटवर्क की मदद से काम करती है। इससे यूजर एटीएम में कार्ड डालते ही बैंक के होस्ट प्रोसेसर से जुड़ जाता है। ऐसे में वह बिना बैंक जाए ही अपने खाते से पैसा निकाल सकता है।

हर ग्राहक के डेबिट या क्रेडिट कार्ड के पिछले हिस्से में एक खास मैग्नेटिक स्ट्रिप होती है, जिसमें उसकी पहचान संख्या व अन्य जरूरी जानकारियां कोड के रूप में होती हैं। जब ग्राहक कार्ड को एटीएम के कार्ड-रीडर में डालता है,

111 एटीएम मैनेटिक स्ट्रिप में छिपी इन जानकारीयों को पढ़ लेता है। यह जानकारी जब होस्ट प्रोसेसर के पास पहुंचती है, तो वह ग्राहक के बैंक से ट्रांजेक्शन का रास्ता साफ करता है। जब ग्राहक कैश निकालने का विकल्प चुनता है तो होस्ट प्रोसेसर और उसके बैंक अकाउंट के बीच एक इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया के पूरा होते ही होस्ट प्रोसेसर एटीएम को एक अप्रूवल कोड भेजता है। यह कोड एक तरह से मशीन को पैसा देने के आदेश के समान होता है। इस प्रकार आपका एटीएम काम करता है।

एटीएम का उपयोग

वर्तमान युग में एटीएम का प्रयोग मानव दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। अतएव एटीएम प्रयोग करते समय कुछ सावधानियां आवश्यक हैं। इन सावधानियों को ध्यान में न रखने पर बेवजह की कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

- ♦ एटीएम का प्रयोग करते समय ध्यान रखें कि कोई आपका पिन नम्बर न देख पाए। यदि आपके साथ एटीएम केबिन में अनजाना व्यक्ति मौजूद है तो अपने शरीर से एटीएम की-पैड को घेरे रखें।
- ♦ एटीएम पर पिन डालते हुए ध्यान दें कि बाहर से कोई देख न रहा हो।
- ♦ पिन नम्बर को याद रखें। अगर याद नहीं हो पाता है तो उसे ऐसी जगह लिखकर रखें जहां सिर्फ आप की ही पहुंच हो। एटीएम का प्रयोग करते समय इसका बेहद सावधानी से प्रयोग करें और इसे मशीन के आसपास न छोड़ें।
- ♦ एटीएम से पैसा निकालते समय, खासकर रात के समय तो एक साथी को लेकर अवश्य जाएं। रात के समय इस बात का खासतौर पर ख्याल रखें कि कोई संदेहास्पद व्यक्ति आपके आसपास न हो।
- ♦ एटीएम कार्ड को पहले से बाहर निकाल कर रखें। मशीन के पास पहुंचने पर अपने पर्स आदि से निकालने में समय न लगाएं। कोशिश करें अगर ज्यादा रकम निकालने जा रहे हैं तो ऐसे क्षेत्र का एटीएम चुने जो तुलनात्मक तौर पर अधिक सुरक्षित हो।
- ♦ एटीएम मशीन से निकलने के बाद निकाली गई राशि को गिने जरूर पर यह भी ध्यान रखें कि ऐसा करते समय किसी की निगाहें आप पर न हों।
- ♦ मशीन से प्राप्त रसीद को अपने पास जरूर रखें और इसका मिलान अपने अपने बैंक स्टेटमेंट से अवश्य करें। अगर कोई समस्या हो तो संबंधित बैंक से संपर्क करें।
- ♦ अपने फोन नम्बर, घर के पते, नाम या संकेताक्षरों आदि पर अपना पिन नम्बर न लिखें।
- ♦ पिन डालते समय कीपैड को अपने दूसरे हाथ से छुपाए रखें।

एटीएम मशीनों के साथ समस्याएं



ग्राहकों के लिए बैंकों से रुपयों की निकासी सरल बनाने हेतु एटीएम मशीनों को चालू किया गया था, लेकिन इन एटीएम मशीनों में भी कई समस्याएं आती रहती हैं। इनके कारण ग्राहकों को कई बार परेशानी उठानी पड़ जाती है। मशीन से कभी नकली नोट निकल आते हैं तो कभी बिना नोट निकले ही निकाले गए रुपयों की खाली रसीद बाहर निकल आती है। इसका संभावित कारण कुछ हद तक बैंकों में चाइनीज कंप्यूटर तकनीक का प्रयोग माना जा रहा है। इसके अलावा हाल की कुछ घटनाओं से एटीएम मशीन को ही चोरी कर ले जाने की घटनाएं सुनाई दी हैं। इनके कारण चोरी या लूट का अलार्म न बजना या मशीन के तार काटे जाने

पर स्विच यानी कंट्रोल रूम को खबर भी न लग पाना आदि हैं। एटीएम मशीन मरम्मत के लिये खुली होने की स्थिति में स्विच के साथ अपना संपर्क तोड़ देती है। ऐसे समय बैंक अधिकारी या एटीएम वैंडर के सामने मशीन की आवश्यक मरम्मत की जाती है। ऐसे में संभव है कि मशीन चोर ले जाएं और स्विच को खबर भी न लगे।

एटीएम कार्ड का गलत इस्तेमाल तो ग्राहक को पुलिस या कोर्ट कचहरी के चक्कर भी कटवा सकता है। यदि आपने किसी दूसरे बैंक का एटीएम कार्ड किसी दूसरे बैंक के एटीएम में इस्तेमाल किया है और राशि नहीं मिली है तो दोगुनी मानसिक परेशानी झेलनी पड़ेगी। एटीएम मशीन फेल होने की दशा में बैंक की एकाउंटिंग प्रणाली भी फेल हो जाती है। एटीएम कोड के अनुसार राशि का भुगतान हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। मशीन में उपलब्ध 100, 500 व 1000 के डिब्बों से दूसरी करेंसी की आपूर्ति न हो सके इसके लिए न तो कोई मैकेनिकल न ही कोई साफ्टवेयर में व्यवस्था है। इस दृष्टि से ये मशीनें बैंकिंग के लिये सुरक्षित नहीं मानी जा सकती। गलत भुगतान की प्रविष्टियों को ठीक करने की व्यवस्था भी कारगर नहीं है।

कई बार किसी एटीएम मशीन से नकली नोट निकल पड़ते हैं और बैंक इनकी कोई जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं होता। कई बार जब एटीएम मशीन खाते से रुपये तो निकाला दिखा देती है लेकिन नकदी मशीन से बाहर नहीं आती या कभी कम ही निकालती है। ऐसी शिकायतों के लिये ग्राहक बैंक में पूछताछ करते हैं तो बैंक अपने काल सेंटर का नंबर थमा देते हैं। टोल फ्री नंबर पर चलाए जा रहे इस काल सेंटर की लाइन मिलना ही पहले तो मुश्किल है और मिल भी जाए तो आधे घंटे की बातचीत के बावजूद ग्राहक को राहत नहीं मिल पाती है। सामान्यतः काल सेंटर ग्राहकों को बिना मांगे शिकायत संख्या तक उपलब्ध नहीं कराते। ग्राहक शिकायत संख्या लेकर मानसिक तनाव ग्रस्त हो इससे कहीं बेहतर है कि बैंक में जाकर चैक से अपनी राशि निकाले और इन झंझटों से मुक्त रहे।

प्रायः एटीएम कार्ड और इंटरनेट बैंकिंग के आवेदन पर साफ लिखा होता है कि किसी किस्म के नुकसान के लिए बैंक की जवाबदेही नहीं होगी। हैकिंग और पासवर्ड चोरी में बैंककर्मियों की संलिप्तता के मामले भी अब खुलने लगे हैं। ग्राहक अपने खोए हुए एटीएम कार्ड को अपने बैंक में जाकर कैसिल नहीं करवा सकते। बैंक दावा करता है कि आप किसी भी शाखा से एटीएम कार्ड जारी करवा सकते हैं, लेकिन यही कार्ड खो जाए तो पहले बैंक के काल सेंटर में इसकी शिकायत दर्ज करानी है। शिकायत नंबर लेकर बैंक को सूचित करना है। खोए हुए एटीएम कार्ड से नकदी निकालने के अलावा खरीददारी भी संभव है सो ग्राहक चाहता है कि तुरंत उसे खोए कार्ड से मुक्ति मिलनी चाहिए।

कभी मशीन आवाज करती रहती है, पैसा बाहर नहीं निकलता और एटीएम हैंग हो जाता है। कभी यह राशि किसी दूसरे ग्राहक को अनायास ही मिल जाती है क्योंकि राशि बीच में अटकी रहती है और एटीएम अचानक काम करना शुरू कर देता है। कभी ग्राहक की यही राशि एटीएम में नकदी, कागज या रिबन फीड करने वाली कम्पनी के लोगों के हाथ भी लग जाती है।

एटीएम के साथ सावधानी एवं व्यवस्था

एटीएम मशीनों के मेंटीनैस के नाम पर एटीएम में नकदी भरना, दो बार दिन में एटीएम परिसर की सफाई, एयरकंडीशन का चालू रहना, एटीएम मशीन का जीरो डाउन होना, सुरक्षा की दृष्टि से दृश्य और अदृश्य कैमरों का चालू रहना, एटीएम से हर प्रचालन की पर्ची निकलना, दरवाजे का बंद रहना ताकि एक समय में एक ग्राहक एटीएम में रहे, रात में पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था, सुरक्षा के लिये गार्ड आदि इनके वार्षिक मेंटीनैस के कुछ प्रमुख हिस्से हैं जिनका पालन नहीं होता।

— विकास कुमार

आदिवासियों का अर्धकुंभ - माघी मेला

राजमहल की सुरम्य पहाड़ियों को चीर कर बहती है पावन गंगा। इस गंगा नदी के तट पर प्रत्येक वर्ष माघ के महीने में आयोजित होता है। झारखंड राज्य के राजकीय मेला का दर्जा प्राप्त है इस प्रसिद्ध माघी मेला को। यह राजमहल के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान है के रूप में जाना जाता है। इस मेला को संथाल परगना के आदिवासियों का अर्ध कुंभ भी कहा जाता है। इस मेला में संथाल परगना के अलावे पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम, नेपाल और बिहार के सीमावर्ती जिलों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु गंगा स्नान करने के लिए पहुंचते हैं।



झारखंड में रहने वाले आदिवासियों के साथ साथ पड़ोसी राज्यों में रहने वाले साफा होड़ और आदिवासी समुदाय की बड़ी संख्या इस मेला में गंगा स्नान के लिए पहुंचती है। साफा होड़ के अनुयायी शैव संप्रदाय के अंतर्गत आते हैं। इस समुदाय के लोग सफेद वस्त्र पहनते हैं। पूर्ण रूप से सात्विक भोजन करने वाला यह समुदाय मांस व मदिरा का सेवन नहीं करता है। स्नान कर ये लोग पीतल के लोटों में गंगा जल भरकर भोले नाथ को अर्पित करते हैं। बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय के जमावड़ा के कारण इसे अर्धकुंभ की संख्या भी दी जाती है।

इस मेले के इतिहास की बात करें तो किसी को भी नहीं पता कि यह मेला कब से आरंभ हुआ।

कहा जाता है कि मुगलों के शासन के पहले जब राजमहल में चारों ओर जंगल ही जंगल था तब इस इलाके में आदिवासी कबीलों का राज था। उस वक्त सभी प्रकार की विपत्तियों से बचने के लिए राजमहल के गंगा तट पर भगवान शंकर की पूजा की जाती थी। उसी वक्त से सभी महिला व पुरुष भक्त पूर्णिमा के दिन गंगा में नहाकर भगवान शंकर की पूजा करते हैं। पूजा का प्रभाव पूरे आदिवासी समुदाय पर आज भी देखा जा सकता है।

ऐसी मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से आदिवासी समाज और समुदाय पर आई विपत्ति टल जाती है, शरीर में कोई रोग व्याधि नहीं रहती। इसी धार्मिक आस्था के कारण देश के कोने-कोने से आदिवासी समाज के लोग इस माघी मेला में स्नान करने को आते हैं। जिस प्रकार इलाहाबाद में संगम के तट पर स्नान का महत्व है उसी प्रकार राजमहल में गंगा के तट पर स्नान का महत्व आदिवासी समुदाय के बीच है।

जन श्रुति के अनुसार माघी मेला में पूर्णिमा के दिन इस स्थान पर स्नान करने से सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है। इस मेले का विवरण मेगास्थनीज और प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा विवरण में दिया है। पवित्र गंगा मां से मांगी गयी मन्त पूरी होने पर माघी पूर्णिमा पर श्रद्धालु गंगा में स्नान कर पूजा-अर्चना के बाद जोड़ा कबूतर, पाठा व डाव गंगा नदी में चढ़ाते हैं। इसके अलावा इस अवसर पर बच्चों का मुंडन भी किया जाता है। इस मेले में विभिन्न अखाड़ों के साधु संन्यासी भी मां गंगा की भक्ति में लीन होने के लिए राजमहल पहुंचते हैं।

इस मेला को राज्य सरकार द्वारा राजकीय मेला का दर्जा दिया गया है। इस मेले में राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा स्टाल लगाये जाते हैं। इन स्टालों के माध्यम से लोगों को मेले के संबंध में जानकारीयां उपलब्ध करायी जाती है। रंग बिरंगे परिधानों में सजे धजे आदिवासी समुदाय के नर नारी इस मेले में आते हैं और मेला घूमते हुए सर्कस, झूले, एवं अन्य मनोरंजक उपादानों का लाभ उठाते हैं। किशोर और युवतियां नाच और थियेटर्स का भरपूर लुत्फ उठाते हैं।

--सुप्रिया राय

क्षमता और उसका व्यय

अपने शैशव के दिनों की स्मृतियों में से बहुत सी बातें बहुत ही पीछे छूट गई हैं या यूँ कहे विस्मृत हो गई हैं पर कुछ बातें मस्तिष्क में छप गई हैं और उसे चाह कर भी अपने स्मृतियों में से अलग करना असंभव है। परमेश्वर की असीम कृपा थी कि मुझमें प्रारंभ से ही साहित्य से अनुराग था। अंग्रेजी भाषा से भय कभी नहीं रहा किंतु उसके गूढ़ अर्थों को समझने में असमर्थ जरूर था किंतु हिंदी साहित्य के अतल तल में डुबकी लगाने में काफी आनंद प्राप्त होता था। 'चंदा मामा' और 'चाचा चौधरी' की कहानियों से प्रारंभिक सफर शुरू हुआ तथा दसम कक्षा तक पहुँचते - पहुँचते प्रेमचंद, शरतचंद, विष्णु प्रभाकर, मैक्सिम गोर्की, श्रीलाल शुक्ल जैसे न जाने कितने हस्ताक्षर साहित्यकारों के हिंदी भाषा में उपलब्ध कहानियों और उपन्यासों को समाप्त किए बगैर छोड़ने की तबियत नहीं होती थी। मेरे मित्रों को सदैव इस पर कौतुहल होता था कि मैं इतने मोटी-मोटी उपन्यासों को इतनी तन्मयता से कैसे पढ़ता हूँ। उनके लिए पाठ्यक्रम में दी गई कहानियों को एक बार से दो बार पढ़ने की इच्छा नहीं रहती थी अथवा चूँकि मातृभाषा में कहानियाँ थी, वे अति आत्मविश्वास के शिकार थे। फलतः परीक्षाओं में मुझे अंग्रेजी और हिंदी साहित्य के पक्षों में सदैव अव्वल अंक प्राप्त होते तथा मैं साहित्य पढ़ाने वाले गुरुजनों का विशेष कृपा पात्र बना हुआ था। शायद यही कारण था कि गुरुजन मुझे विशेष छात्र समझते हुए पाठ्यक्रम से इत्तर की बातें भी चर्चा करते। उस चर्चा में मुझे आनंद मिलता और मैं अपनी उपस्थिति भी दर्ज करता। उसी चर्चा में मुहावरों और लोकोत्तियों की भी चर्चा हुआ करती थी। मुहावरों और लोकोत्तियों के अर्थों को मैं स्पष्ट भी कर देता परंतु अब मुझे लगता है कि उस समय मैं मुहावरों के अर्थों को तो समझता था किंतु उसके व्यापकता के आस-पास कभी नहीं रहा। आज जब मैं मुहावरों और लोकोत्तियों के अपने संकलन को देख रहा था, मुझे एक लोकोक्ति प्राप्त हुई - “अपना सारा पैसा एक काम में मत लगाओ/सारी सम्पत्ति एक जगह मत रखो” (Do not put all your eggs in one basket)। इसने मुझे बरबस प्रभावित किया और कुछ लिखने के लिए प्रेरित किया इसलिए अपने को हल्का करने के प्रयोजन से इस पर कुछ लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई।

अब मेरे विचार से इसका व्यापक अर्थ हुआ- “अपनी क्षमता को एक जगह मत लगाओ” (Do not put all your efforts at one place)। क्षमता ऐसे ही नहीं आती। उसके इतिहास के पृष्ठभूमि में समय, तन्मयता, लगन, चेष्टा, आकांक्षा, साधना या तप, बलिदान, का अतीत में व्यय करने के भरपूर संकेत हैं। इतने प्रचेष्टा से क्षमता की प्राप्ति हुई है और जब इस क्षमता को व्यय किया जाएगा तो एक अलग तत्व रूपायित (Transform) होकर निकलेगा। रूपायित हो जाने पर स्वाभाविक है, आत्म संतुष्टि की प्राप्ति होती है जो कालांतर में शांति प्राप्त करने के मार्ग को प्रशस्त करती है। कली खिलने के पहले ही मुर्झा जाए, ऐसी इच्छा न तो कली की रहती है और न ही माली की। मेरा दर्शन तो यह कहता है कि कली खिले, खेले और इठलाए तथा मदमस्ती में झूमते हुए सौन्दर्य और सुरभि को वातावरण में फैला कर स्वयं भी तथा अन्य को भी आनन्द से भर दे। अभिमान करने का मौका प्रदान करे तभी उसके अस्तीत्व को मर्यादा प्राप्त होगी। ठीक उसी तरह क्षमता की स्थिति है। क्षमता कली है, उसे रूपायित होना है, फूल बनना है, सुगंध और सौन्दर्य को प्राप्त करना है, दूसरों को आनन्द प्रदान करना है, स्वयं के लिए संतोष और शांति को बटोरना है।

इस तरह से खुद को प्रसन्न रखना है। स्वयं एवं समाज के लिए गर्व तथा प्रशंसा का पात्र बनना है। समाज के लिए यह एक दृष्टांत भी हो सकता है, अनुकरणीय होने की संभावना भी इसमें है। यही इसकी यात्रा का अंतिम पड़ाव है, चरम है, निष्कर्ष है। दूसरे शब्दों में क्षमता एक बीज है। रोपा गया, सिंचा गया, संरक्षा और सुरक्षा देकर बचाया गया, पौध बना, वृक्ष बना और तब फल और छांव दिया। बीज का जीवन सार्थक बना। खुद सड़ - गलकर, असंख्य - असंख्य फल और बीज का सृजन कर अपने जीवन को सार्थक बनाया। इसी में उसकी सार्थकता है। वह मर कर भी अमर है। किंतु अब सोचिए, यह बीज जाने - अनजाने ऐसे जगह लगाया गया जहां उसे जीवन ही नहीं मिला। सूख कर लकड़ी बन गया तथा धूप की तपीस, प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रहार से वह सड़ गल गया। उसकी ऐसी परिणति ? इस हालात के लिए शायद ही किसी के पास दया और सहानुभूति रहे। सब व्यर्थ !

मित्रों ; सावधानी हटी ,दुर्घटना घटी । यदि आप क्षमतावान हैं तो एक लोकोक्ति सदैव स्मरण रखना उचित होगा,-
 “अच्छा होने से पूर्वोपाय बेहतर ”(Prevention is better then cure)। अपनी क्षमता को पहचान कर उसे रूपायित (Transform) होने दिया जाना चाहिए । उसे छायादार तथा फलदार वृक्ष बनने दें । यह कलियुग है, थोड़ी सी असावधानी मात्र से ही समस्त आशाएं और संभावनाएं समाप्त हो जाएगी । इसलिए आज के परिप्रेक्ष्य में इस लोकोक्ति को व्यापक अर्थ देने और समझने की जरूरत है । बहुत बेहतर होगा कि 'छक्का नहीं तो फक्का 'अथवा ' आए आम चाहे जाए लबेदा ' जैसे मुहावरों के चक्कर में न पड़ा जाए तथा अपनी समस्त क्षमताओं को किसी एक ही जगह न लगाकर उसे कई जगहों पर सावधानी से लगाई जाए तथा पूरी इमानदारी एवं लगन से उसे बचाते हुए संवार -दुलार कर बढ़ाया जाए । खुदा न खास्ता एक आध जगह से यदि निराशा भी प्राप्त हो तो अन्य जगह से आशा की संभावनाएं रहेंगी । जब तक आशा है तभी तक जीवन जीने की कामना रहेगी अन्यथा जीवित होकर भी मुर्दों सा जीवन जीने के लिए बाध्य रहना पड़ेगा । जीवन को लौटरी के सहारे न छोड़कर उसे जिन्दादीली से जीया जाए ।

क्षमताओं की व्याख्या एवं स्वरूप के बारे में भी अधिकांशतः लोगों की धारणा अस्पष्ट होती है । मंत्रों या कथा पुराणों की भांति हम सुनी -सुनाई जुमलों का उच्चारण मात्र करते हैं मानो कुछ कहना है सो कह दिया । कही हुई बात कर्ण प्रिय अवश्य होती है मसलन अमुक की क्षमता बहुत है या खुद के बारे में भी आत्म प्रशंसा के प्रयोजन से कहते हुए सुने जाते हैं कि मैं क्या कम क्षमतावान हूं ? या फिर इसकी समानार्थी शब्द सामर्थ्य से लगा लिया जाता है परंतु उलट कर यदि कहने वाले से यह प्रश्न पूछ लिया जाए कि अमुक अथवा आप किस विषय में क्षमता रखते हैं तो स्थिति अक्सर हास्यास्पद हो जाया करती है। वस्तुतः ईश्वर परम दयालु है। उन्होंने प्राणियों में उसके जन्म के साथ ही क्षमता को भी उपहार स्वरूप पहले से ही प्रदान कर दिया है जो कालांतर में किसी के पास चक्रवृद्धि व्याज की माफिक सतत बढ़ती रहती है तो किसी में घुन लग जाता है और शनै शनै समाप्त प्रायः हो जाता है। मेरे ख्याल से क्षमताओं की श्रीवृद्धि में महत्वकांक्षा की अहम भूमिका हुआ करती है। यहाँ भी हम प्रायः भ्रमित रहते हैं। कुछ अपवाद छोड़कर इसका सहज मतलब तेज तर्रार होने से लगा लिया जाता है। वस्तुतः यह महत्व की आकांक्षा से तात्पर्य रखता है।

अंक गणित के एकिक नियम सा यदि इसे तोड़ तोड़कर देखा जाए तो यह गंगोत्री के जल सा साफ – साफ दिखाई पड़ने लगता है। इसका उत्तर प्राप्त करना भी इतना सहज नहीं है। यदि यहाँ हम किसी बेहतरीन रेस्तरा या होटल के खाने की मेनु के सिद्धांत को अमल में लाए तो इस प्रश्न को कुछ हद तक सरल किया जा सकता है। यहाँ हमें इसी तर्ज पर भिन्न - भिन्न इच्छाओं की फेहरिस्त तैयार करनी पड़ेगी और तब चयन करने में सुविधा हो जाएगी अन्यथा हमें दूसरों की ईच्छा को ही जबरदस्ती अपनी ईच्छा बनानी पड़ जाएगी और तब उसे प्राप्त करने में ताउम्र व्यतीत करना पड़ेगा। मिल गया तो ठीक नहीं मिला तो अपनी किस्मत। ऐसी स्थिति में ईश्वर ही कुंठाग्रस्त होने से बचाए। अमुमन यह देखा गया है कि महत्वकांक्षा की प्रमुख्यतः दो शाखाएं हैं। पहली शाखा ज्ञान की आकांक्षा को पूरा करते हुए तथा दूसरी धन की आकांक्षा को प्राप्त करते हुए महत्वपूर्ण बनने की रहती है। इनकी उपलब्धि एवं विस्तार के अनुपात में ही हमें प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। यदि हम कुल मिलाकर देखे तो व्यक्ति को औसतन प्रतिष्ठा प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा रहती है जिसे इन माध्यमों से होकर ही प्राप्त किया जा सकता है। इसके विपरित किसी दैवी कृपा से या सांस्कारिक अथवा सामाजिक कारण से किसी -किसी में समर्पण और सेवा भाव कूट-कूट कर भरा होता है। इस तरह के व्यक्ति नर के रूप में नारायण के दर्शन करते हैं और वह बिना किसी आकांक्षा के सेवा भाव में वर्षों तल्लीन रहते हैं। चूँकि यह भी एक किया गया कर्म है तो फल की प्राप्ति अवश्यभावी है। इसे भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और तब उसके अंदर महत्व की आकांक्षा का जन्म होता है। अक्सर ऐसे व्यक्ति मोक्ष की कामना करने लग जाते हैं और उसे प्राप्त करने में तल्लीन हो जाते हैं।

क्षमता के बारे में मोटे तौर पर यह व्याख्या पर्याप्त होनी चाहिए। कम से कम कुहासे का कोहरा तो अवश्य कम हुई होगी फिर यदि कोई चाहे तो संभवतः अपनी क्षमताओं का विकास एवं व्यय समुचित तौर पर करने में अपने आप को भ्रम की स्थिति में न पाए पर मेरी दृष्टि में मेरा यह स्पष्ट मत है कि यह एक गंभीर एवं संवेदनशील मसला है। ऐसे में सब कुछ ईश्वर के सहारे नहीं छोड़ा जाना चाहिए बल्कि ईश्वर ने हमें जो कृपापूर्वक उपहार दिए हैं उनका तरीका और सलिका से व्यवहार करना विवेकपूर्ण होगा फिर जिस किसी भी तरह हो, इसे समझ लिया जाना चाहिए। इसे कतई हल्के में न लेकर इस बात पर अपनी पैनी नजर रखनी होगी जिससे क्षमताओं का अपक्षय या दुरुपयोग रूक सके तथा इसके स्थान पर इसे नया जीवन और गति प्राप्त हो जा ।

कल और आज

जिस देश में कभी थी बहती दूध की नदियां,
उस देश में अब पानी बिकते देखा ।

जहां ईमानदारी का परचम था लहराता
उस देश में ईमान अब बिकते देखा ।
वचन निभाते हरिश्चंद्र का तन भी जहां बिकते देखा,
वही पल-पल लोगों का वचन आज बदलते देखा ।

महात्मा गांधी, महावीर, बुद्ध का त्याग और तपस्या देखा
वही आज स्वार्थ के वास्ते लोगों का खून बहाते देखा ।
अंगूठा काटकर एकलव्य को गुरुदक्षिणा देते देखा,
वही आज गुरु-शिष्य परंपरा का दम यहां पर घुटते देखा ।
सोने की चिड़ियों के देश में वैभव, संपन्नता का आलम देखा
वही रोटी के टुकड़े के लिए बूढ़े बच्चों को बिलखते देखा ।

जहां श्रवण कुमार की सेवा से माता पिता को धन्य होते देखा,
वही आज छोड़ मातु पिता, को पुत्र को पत्नी सेवा करते देखा ।
मानो तो क्या पेड़ पौधों को भी पर दुख में आंसू बहाते देखा,
वही आज दुख की घड़ियों में स्वजन को उनपे हंसते देखा ।
जहां प्रेम और सद्भावना का रस चारों ओर बिखेरते देखा
वही ईर्ष्या द्वेष की आग में लोगों को यह जलते देखा ।
जहां पूज्य गुरुजनों के आगे लोगों को शीश झुकाते देखा,
वही श्रद्धा, विश्वास, आस्था का स्वरूप यहां बदलते देखा

जहां मानवीय मूल्यों के आलोक से सारा विश्व आलोकित देखा,
वही आज अंधकार में सारा देश भटकते देखा ।
जहां विश्व कल्याण की कामना हर शख्स को यहां करते देखा,
वहीं आज यहां हर इंसा को तांडव नृत्य करते देखा ।
जहां देव संस्कृति का धर्म ध्वज चहुओर लहराते देखा
वही आज दानव संस्कृति को जन जन के बीच फैलाते देखा ।
अब आओ संवारे राष्ट्र का गौरव फिर विजय निशान यहां लहराए
न शिकवा रहे होठों पर किसी के, न गिला कोई औरों से हो।

— विजय कुमार

बाल कथा विशेषांक

बढ़ते कदम

ने विगत दो
वर्षों में अपने
24 अंकों के
नियमित



प्रकाशन को सफलतापूर्वक पूर्ण कर एक
गौरवमयी उपलब्धि हासिल किया है। इसका
आगामी अंक **बाल कथा विशेषांक के रूप**
में प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर
सभी सुधी पाठकों और रेलवे कार्मिकों व
लेखकों से अधिकतम **600 शब्दों** में स्वरचित
बाल कथायें प्रकाशनार्थ आमंत्रित की जाती
हैं। सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को **बढ़ते कदम** के
आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।
नियमानुसार प्रत्येक प्रकाशित कहानी पर बाल
कथा लेखक को मानदेय स्वरूप 500/-
रु.प्रदान किया जायेगा। रचनायें हाशिया
छोड़कर कागज के एक ओर साफ-साफ
हस्तलिखित या टंकित होनी चाहिए। रचनायें
ई-मेल से या निम्न पते पर दिनांक
15.06.2016 तक अवश्य भेज दी जाए।

संपादक

बढ़ते कदम

राजभाषा अनुभाग, द्वितीय तल
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय/मालदा

पो.—झलझलिया

मालदा, पिन-732102

ई-मेल-rajbhasha.malda@gmail.com

दूरभाष- 72190/72192 (रेल)

शब्द जोड़ में

कविता में कवि की
 हुंकार, निर्झरिणी सी प्रवाहों का
 सम-कालीन का प्रभाव हो
 सुकोमल पदों का रमणीय
 मखमली शैल्या का उद्धरण हो
 निर्वाध कविता का बोध
 अमुक छाया का साक्षात दर्शन हो
 नभतल, भूतल में
 अलौकिक, पारलौकिक प्रतिबिंब का सीधा
 प्रदर्शन हो
 शब्द जोड़ में
 प्रतिमा व यशस्वी का अद्वितीय वर्णन
 काव्यात्मक भाव भंगिमा से ओतप्रोत
 जीवन साध्य हो
 आत्मबोधि सुस्वर बोल ध्वनित कर
 कवि का सुपुष्टि भाव प्रकट हो
 शब्द जोड़ में
 काव्य अत्यंत भाव विभोरी व
 स्निग्ध हो, जब कविता की गूंज
 गुंजित हो समा भावाकुल हो जाए
 मन मुग्ध हो, दिलेशु आंसू
 बहिर्गत हो, नयन चमकने लगे
 शब्द जोड़ में
 प्रांशु कल्पना का सारिष्ठ चमत्कार हो
 दुखी, बोझिल मन हर्षित हो उठे
 ऊंची छलांग कर जीवन मृत्यु की राह
 तय कर पलक पल कर ले यही बोध हो
 किरणपुंज का प्रकाशमयी सवेरा हो
 शब्द जोड़ में

— सचिदानंद साह

सोचती हूं

सोचती हूं
 मैं बस सोचती हूं
 तेरी दोस्ती को सोचती हूं
 तेरे साथ बीते हुए
 पल हर पल को सोचती हूं
 जो गुजर गया
 भुला नहीं पाती
 लगातार सोचती हूं
 खूब है सिला दोस्ती का
 पास कभी रहते नहीं
 पर सोचती हूं
 कोई तो पल आएगा
 मेरी भी याद दिलाएगा
 चले गए दूर तो क्या हुआ
 वक्त कभी तुम्हें पास लाएगा
 मौका जब भी मिलता है
 बस सोचती हूं
 पर मेरी सोच का क्या
 तुम भी कभी सोचते हो
 चलो कोई बात नहीं/तेरे बदले भी
 मैं ही सोच लेती हूं
 मैं तो आज भी
 उसी किनारे पर खड़ी हूं
 जहां से तुम चल दिए थे
 तुम सोचो न सोचो
 पर मैं सोचती हूं
 किसी ने सही कहा है
 समय किसी के लिए नहीं रुकता
 नहीं ठहरती हवा किसी के लिए
 मैंने मान लिया है तुमको अपना
 इसलिए यह सोच नहीं रुकती
 तभी तो सोचती हूं । — प्रिया प्रसाद

संरक्षा विभाग, मालदा मंडल द्वारा रेलों पर अग्नि के शमन, दमन एवं उपयोग की नवीनतम जानकारी से संबंधित आयोजित सेमिनार के कुछ दृष्य





बढ़ते कदम

सर्च-13
जर्नल-1
2014

पूर्व रेलवे, भारतीय मंडल की सुवर्णायुष्म दिवसी ई-यात्राओं

इस संक में

आयुक्त	सिक्किम में राजभवन	विचार-विचार	मंडल की परामर्शदात्री
साहायक	फिरो जेठ फिरो	रेल-यात्री हवाका	आदर्शिक
कर्मियों	करीब करोड़	आवेक-विचार	भारत मंडल

भारत मंडल के अंतर्गत पूर्व एवं उत्तरपूर्व रेलवे से पाए गए अद्भुत चमत्कार — मंदिर विल

सिक्किम राज्य और भारतीय रेल की सहकारिता और ट्रेनों से इसके विस्तृत प्रदर्शन है।





